Master of Arts (M.A.) Part-II (Hindi) (C.B.C.S.) Fourth Semester Examination

4T1 भाषा विज्ञान

भाषा

भाषा की परिभाषा:- भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।

भाषा के लक्षण

1. यादृच्छिकता
2. सृजनात्मकता
3. अनुकरणग्राह्यता
4. परिवर्तनशीलता
5. विविक्तता
6. द्वैतता
7. भूमिकाओं की परस्पर परिवर्तनीयता
8. अंतरणता
9. मौखिक -श्रव्यता
10. असहजवृत्तिकता

भाषिक संरचना

भाषिक संरचना और उसके विभिन्न स्तर भाषा यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की संरचनात्मक व्यवस्था है अर्थात इस व्यवस्था की अपनी विशेष प्रकार की संरचना होती है। साथ ही इस संरचना में केवल एक स्तर नहीं होता। इसमें कई स्तर होते हैं जैसे ध्वनि स्तर, रूप स्तर, वाक्य स्तर, अर्थ स्तर आदि। प्रत्येक स्तर पर भाषा की इकाइयां अलग-अलग होती हैं।

1. अर्थ
2. प्रोक्ति
3. वाक्य
4. रूप
5. शब्द

6. ध्वनि

भाषाविज्ञान

भाषाविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा अथवा भाषाओं का एककालिक, बहुकालिक, तुलनात्मक व्यतिरेकी अथवा अनुप्रायोगिक अध्ययन-विश्लेषण तथा तद्विषयक सिद्धांतों का निर्धारण किया जाता है।

भाषाविज्ञान: स्वरूप एवं व्याप्ति

भाषा विज्ञान में भाषा से संबंधित सभी विषय आते हैं जैसे- प्रोक्ति विज्ञान, वाक्य विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, ध्वनि विज्ञान, अर्थ विज्ञान।

अध्ययन की दिशाएं: वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

वर्णनात्मक भाषाविज्ञान:- 'भाषा विज्ञान' के इस प्रकार में भाषा सामान्य का नहीं, बल्कि किसी विशिष्ट भाषा का वर्णन करते हैं। 'वर्णनात्मक भाषाविज्ञान' भाषा के स्वरूप को केवल वर्णित करता है, यह नहीं दिखाता कि वह भाषा का शुद्ध रूप है या अशुद्ध, मानक है या अमानक।

ऐतिहासिक भाषा विज्ञान (एक कालिक भाषा विज्ञान - बहुकालिक भाषा विज्ञान):- एककालिक से आशय भाषाविज्ञान की उस प्रकार से है जिसमें किसी भाषा का एक कालबिंदु पर अध्ययन करते हैं। ऐसे ही कई कालों के सूश्रृंखलित अध्ययन को 'बहुकालिक' कहते हैं। एककालिक को समकालिक या संकालिक नाम से भी कुछ लोगों ने पुकारा है। इसी प्रकार बहुकालिक या कालक्रमिक भाषाविज्ञान भी कहा जाता है। बहुकालिक या कालक्रमिक भाषाविज्ञान 'ऐतिहासिक भाषाविज्ञान' के नाम से भी जाना जाता है। इतिहास आखिरकार विभिन्न कालों के अध्ययन का कालक्रमिक सुश्रृंखलित रूप ही तो है। इस तरह मूलतः ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का आधार एक कालिक भाषाविज्ञान ही है।

तुलनात्मक भाषाविज्ञान:- इसमें दो या अधिक भाषाओं की तुलना करके ध्वनि, शब्द तथा व्याकरण की समानताओं का पता लगाया जाता है तथा उनके आधार पर दो या अधिक भाषाओं को एक स्त्रोत से विकसित होने का निर्णय किया जाता है। तुलना में जो बातें समान न होकर और असामान या विरोधी मिलती हैं वे भाषाविज्ञान में विशेष उपयोगी नहीं मानी जाती हैं।

स्वन विज्ञान

वक्ता द्वारा वाग्यंत्र का उपयोग करते हुए जो ध्वनि उच्चरित होती है तथा वायु तरंगों के आरोह-अवरोह से यह श्रोता तक पहुंचती है। इस वायुमंडलीय दबाव तरंगों से उत्पन्न सार्थक शब्द या वाक्य अथवा वाक्य समूह का अध्ययन ध्वनि विज्ञान है।

वागवयव और उनके कार्य

ध्वनियों के उच्चारण वाग्यंत्र से होता है जिसे उच्चारण अवयव भी कहते हैं। इन उच्चारण अवयवों को दो वर्गों में रखा जा सकता है-

1. चल अवयव
2. अचल अवयव

चल अवयव - इन अवयवों को ऊपर उठाकर या नीचे ले जाकर ध्वनियों का उच्चारण करते हैं इन्हीं को करण भी कहते हैं।

अचल अवयव- ऊपर के दांत, ओष्ठ, तालु के विभिन्न भाग इसके अंतर्गत आते हैं। ये चल नहीं हैं।

स्वन की अवधारणा :-किसी भी वस्तु से किसी भी तरह का ऐसा कुछ जो सुना जा सके, उसे सामान्यतया 'ध्वनि' कहते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से ध्वनि वायुमंडलीय दबाव में परिवर्तन या उतार-चढ़ाव का नाम है। यह परिवर्तन वायुकणों के दबाव तथा विरलन के कारण होता है। भाषा विज्ञान में जिस ध्वनि का विचार किया जाता है, वह इतनी व्यापक नहीं है। सामान्यतया इसे ध्वनि से अलग करने के लिए भाषा ध्वनि या स्वन संज्ञा से अभिहित किया गया है। भाषा ध्वनि भाषा में प्रयुक्त ध्वनि की लघुतम इकाई है जिसका उच्चारण और श्रोतव्यता की दृष्टि से स्वतंत्र व्यक्तित्व हो। संक्षेप में भाषा में प्रयुक्त ध्वनि ही भाषा ध्वनि है।

स्वन का वर्गीकरण

स्वनों का सबसे प्रचलित और प्राचीन वर्गीकरण स्वर और व्यंजन रूप में मिलता है। स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वयं उच्चरित होते हैं अथवा स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख- विवर से निकल जाती है।

व्यंजन उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वर की सहायता से उच्चरित होते हैं अथवा व्यंजन वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकलने पाती या तो इसे पूर्ण अवरूद्ध होकर

आगे बढ़ना पड़ता है, या संकीर्ण मार्ग से घर्षण खाते हुए निकालना पड़ता है या मध्य रेखा से हटकर यह या दोनों पाशर्वों से निकलना पड़ता है, या किसी भाग को कंपित करते हुए निकलना पड़ता है। इस प्रकार वायु मार्ग में पूर्ण या अपूर्ण अवरोध उपस्थित होता है।

स्वनिक परिवर्तन

भाषा परिवर्तनशील है। यह परिवर्तन उसमें सभी स्तरों- वाक्य, रूप, अर्थ, ध्वनि आदि पर होता है। ध्वनि-परिवर्तन के कारण दो प्रकार के होते हैं -आंतरिक और बाह्य। आंतरिक से आशय है वह कारण जो शब्द में या ध्वनि विशेष में परिवर्तित होते हैं। कारण वे हैं जो शब्द के भीतर न होकर उसके बाहर परिस्थिति अथवा वक्ता आदि में होते हैं।

अस्वीकृत कारण

1. वाग्यंत्र की भिन्नता
2. श्रवण इंद्रिय की विभिन्नता
3. भौगोलिक प्रभाव

आंतरिक कारण

1. ध्वनियों का परिवेश
2. ध्वनियों की अपनी प्रकृति
3. स्थिति के कारण ध्वनियों की अपनी शक्ति शब्दों की असाधारण लंबाई
4. मुख सुख, उच्चारण-सुविधा या प्रयत्न-लाघव
5. बोलने में शीघ्रता
6. भ्रामक या लौकिक व्युत्पत्ति
7. सादृश्य
8. लिखने के कारण
9. बलाघात
10. अज्ञान
11. अनुकरण की अपूर्णता
12. किसी विदेशी ध्वनि का अपनी भाषा में अभाव
13. भावुकता
14. विभाषा का प्रभाव

15. सहजीकरण

स्वनिम की अवधारणा

स्वनिम विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें किसी भाषा में प्रयुक्त स्वनिमों तथा उनसे संबद्ध पूरी व्यवस्था पर विचार करते हैं। इसके अंतर्गत स्वनिम तथा उपस्वन का निर्धारण, उपस्वन का वितरण, स्वर और व्यंजन स्वनिमओं का उस भाषा में प्रयुक्त संयोग एवं अनुक्रम प्राप्त खंड्येत्तर स्वनिमों की व्यवस्था, रूपिमों के मिलने पर घटित होने वाली स्वनिमिक परिवर्तन आदि स्वनिमिक व्यवस्था से संबंधित सारी बातें आती हैं।

स्वनिम के भेद

स्वनिम दो प्रकार के होते हैं-

1. खंड्य स्वनिम
2. खंड्येतर स्वनिम रूपिम की अवधारणा

रूप विज्ञान

रूपिम की अवधारणा

भाषा या वाक्य की लघुत्तम सार्थक इकाई को रूप ग्राम या रूपिम कहते हैं।

रूपिम के भेद

1. रचना और प्रयोग की दृष्टि से रूपिम के भेद
1. मुक्त रूपिम
2. बद्ध रूपिम
3. मुक्तबध्द रूपिम

2.अर्थ और कार्य की दृष्टि से रूपिम के भेद

1. अर्थदर्शी रूपिम
2. संबंधदर्शी रूपिम या कार्यात्मक रूपिम

संबंध तत्व एवं अर्थ तत्व

वाक्य में दो तत्व (संबंध और अर्थ) होते हैं। दोनों में प्रधान अर्थ तत्व है। दूसरे को संबंध तत्व कहते हैं। संबंध तत्व का कार्य है विभिन्न अर्थतत्वों का आपस में संबंध दिखलाना। उदाहरण के लिए- 'राम ने रावण को बाण से मारा' ।इस वाक्य में चार अर्थ तत्व हैं- राम, रावण, बाण, मारना। वाक्य बनाने के लिए चारों अर्थ तत्वों में संबंधतत्व की आवश्यकता पड़ेगी। अतः यहां चार संबंधतत्व भी हैं। 'ने' संबंधतत्व वाक्य में राम का संबंध दिखलाता है और इसी प्रकार 'को' और 'से' क्रम से रावण और बाण का संबंध बतलाते हैं। 'मारना' से 'मारा' पद बनाने में संबंधतत्व इसी में मिल गया है।

रूप परिवर्तन की दिशाएं (प्रकार)

रूप परिवर्तन निम्नांकित दिशा में होता है-

1. पुराने संबंध तत्व का लोप तथा नए का प्रयोग
2. सादृश्य के कारण नए संबंध तत्व के साथ नए रूप
3. अतिरिक्त प्रत्यय का प्रयोग
4. अतिरिक्त शब्द-प्रयोग
5. ग़लत प्रत्यय का प्रयोग
6. नया प्रत्यय
7. आधा पुराना प्रत्यय तथा आधा नया
8. मूल में परिवर्तन
9. मूल और प्रत्यय दोनों का परिवर्तन

रूप परिवर्तन के कारण

1. नियमन
2. बहुप्रयुक्त रूपों का प्रभाव
3. ध्वनि-परिवर्तन
4. स्पष्टता
5. अज्ञान
6. बल
7. आवश्यकता
8. नवीनता

वाक्य विज्ञान

वाक्य की अवधारणा

वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द (पद) होते हैं तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम से कम एक समापिका क्रिया अवश्य होती है।

वाक्य के तत्व:-

1. सार्थकता
2. योग्यता
3. आकांक्षा
4. सन्निधि या आसक्ति
5. अन्विति

वाक्य के अंग

1. उद्देश्य
2. विधेय

वाक्य के भेद

1. सरल वाक्य
2. उपवाक्य
3. मिश्र वाक्य
4. संयुक्त वाक्य

वाक्य परिवर्तन की दिशाएं

1. वचन-संबंधी परिवर्तन
2. लिंग-संबंधी परिवर्तन
3. पुरुष-संबंधी परिवर्तन
4. लोप
5. आगम

6. पदक्रम में परिवर्तन

अर्थ विज्ञान

अर्थ की अवधारणा

किसी भी भाषिक इकाई (वाक्य, वाक्यांश, रूप, शब्द, मुहावरा आदि) को किसी भी इंद्रिय (प्रमुखतः कान, आंख) से ग्रहण करने पर जो मानसिक प्रतीति होती है, वही अर्थ है।

शब्द और अर्थ का संबंध

भाषा यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था है। इसका अर्थ यह है कि भाषा के शब्द प्रतीक हैं। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो शब्द और अर्थ का कोई स्वाभाविक एवं सहज संबंध नहीं है। समाज ने यह संबंध मान लिया है, या कहें कि समाज ने विभिन्न शब्दों को विभिन्न अर्थों में प्रतीक के रूप में स्वीकार कर लिया है। शब्द और विशिष्ट अर्थों के प्रतीक या संकेत हैं, इसीलिए उन शब्दों के प्रयोग से श्रोता उन्हीं अर्थों को ग्रहण करता है।जैसे समाज ने पानी शब्द को पानी द्रव्य के लिए संकेत या प्रतीक मान रखा है इसीलिए पानी कहने से उसी का बोध होता है किसी और चीज का नहीं। किंतु यदि कल हिंदी भाषी समाज यह निर्णय कर ले कि 'पानी' शब्द किसी और वस्तु का वाचक माना जाएगा तो कल से 'पानी' शब्द का अर्थ पानी न रहकर वही वस्तु हो जाएगा। भारतीय परंपरा में इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए शब्द के साथ किसी वस्तु के संबंध-स्थापन को संकेत-ग्रह कहा गया है। संकेत-ग्रह के कारण ही शब्द अर्थ विशिष्ट का बोध कराता है।

अर्थ परिवर्तन की दिशाएं (प्रकार)

1. अर्थ-विस्तार (अर्थोकर्ष)
2. अर्थ-संकोच
3. अर्थादेश

अर्थ परिवर्तन के कारण

1. बल का अपसरण
2. वातावरण में परिवर्तन
3. भौगोलिक वातावरण
4. सामाजिक वातावरण
5. प्रथा या प्रचलन-संबंधी वातावरण

6. नम्रता प्रदर्शन
7. आधार सामग्री के आधार पर
8. वस्तु का नाम निर्माण क्रिया के आधार पर
9. शब्द का एक भाषा से दूसरी भाषा में जाना
10. जानबूझकर नए अर्थ में प्रयोग
11. अशोभन के लिए शोभन भाषा का प्रयोग
12. अधिक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग
13. सादृश्य
14. अज्ञान
15. पुनरावृति
16. एक शब्द के दो रूपों का प्रचलन
17. शब्दों का अधिक प्रयोग
18. किसी राष्ट्र, जाति, संप्रदाय ,धर्म या वर्ग के प्रति सामान्य मनोभाव
19. एक वर्ग के एक शब्द में अर्थ-परिवर्तन
20. साहचर्य आदि के कारण नवीन अर्थ का प्रयोग
21. किसी शब्द, वर्ग या वस्तु में एक विशेषता का प्राधान्य
22. व्यंग्य
23. भावावेश
24. व्यक्तिगत योग्यता
25. शब्दों में अर्थ का अनिश्चय
26. एक वस्तु का नाम पूरे वर्ग को देना या सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग
27. अलंकारिक तथा लाक्षणिक प्रयोग
28. दूसरी भाषा का प्रभाव
29. किसी ट्रेड नेम का बहुप्रचार से जातिवाचक संज्ञा बन जाना

प्रोक्ति विज्ञान

प्रोक्ति विज्ञान की अवधारणा

एकाधिक वाक्यों के उच्च समुच्चय को ही प्रोक्ति कहते हैं जो एक सुव्यवस्थित इकाई के रूप में वक्ता या लेखक के मंतव्य की अभिव्यक्ति दे।

प्रोक्ति के प्रकार

1. 'प्रोक्ति क्या है अथवा किस विधा का अंश है' इसके आधार पर
2. प्रोक्ति के वाक्य आपस में किस साधन के द्वारा जोड़े गए हैं इसके आधार पर
3. संबद्ध व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के आधार पर
4. कथन के आधार पर
5. कथन की प्रकृति के आधार पर कथन-शैली के आधार पर
6. प्रोक्ति में स्थान की दृष्टि से संसक्ति के आधार पर